B.A Part-1 (H & Subsi) Philosophy

S/O अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

जैन दर्शन के 'सप्तभंगी नय' का वर्णन करें।

Ans- जैन दर्शन में नय के सात प्रकार बतलाये गये हैं (i) नैगम (2) संग्रह (3) व्यवहार (4) ऋजुसूत्र (5) शब्द (6) समाभिरुढ तथा (7) एवम्भूत नय। जैन दर्शन में परामर्श सात प्रकार के माने गये हैं, अतः इसे 'सप्तभंगी नय' भी कहा जाता है

1. स्यात् है (स्यात् अस्ति)
2. स्यात् नहीं है (स्यात नास्ति)
3. स्यात् है तथा नहीं भी है (स्यात अस्ति च नास्ति च)
4. स्यात् अवक्तव्य है (स्यात अवक्तव्यम्)
5. स्यात् है तथा अवक्त भी है (स्यात अस्ति च अवक्तव्यम् च)
6. स्यात् नहीं है तथा अवक्तव्य भी है (स्यात नास्ति च अवक्तव्यम् च)
7. स्यात् है, नहीं है तथा अवक्तव्य भी है (स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम् च)

स्याद्वाद को कुछ दार्शनिकों ने संदेहवाद भी कहा है जो भ्रामक प्रतीत होता है। जैनों के मतानुसार बन्धन का अर्थ जीव के दुःखों का सामना करना जन्म-जन्मान्तर तक भटकना है। बन्धन के समय जीव शरीर के साथ संयोग की कामना करता है, फलस्वरूप पुद्गल कणों का जीव का संयोग हो जाता है। यही बन्धन है। अज्ञान से अभिभूत रहने के कारण जीव में वासनाएँ निवास करने लगती है ये चार हैं (i) क्रोध, (ii) मान (iii) लोभ तथा (iv) माया।